

जीमत श्री सीआराम जिमावत साईं प्यारे ।  
 विविध ताम सुखधाम लाई सखी थाल संवारे ॥  
 मोइण मिली कचौड़ी पूरी सुभग सलोनी सुन्दर रूरी  
 त्रिकोना और समोसे सुंदर जामे स्वादु भरियो है भूरी  
 और भोजन अभिराम जीमत मिलि जीअ जियारे ॥  
 कोमल और सुवासित तन्दुल घृत से सने पराठे उजल  
 माल पुआ और मधुर मलाई सोंठ मिर्च मिली है दधि नृमल  
 और विविध मिष्ठान स्वाद जामे अति न्यारे ॥  
 तूरी करेला भीण्डी बनाई मेथी पालक ओर चोराई  
 टिण्डे कचालू सुन्दर आलू घी में भूनि धराई  
 दही बड़े रसवान देखि रुचि बढ़ी अपारे ॥  
 अमृती चंद्र कला ओ घेवर लाडू जलेबी पकोड़ी मनहर  
 मोहन भोग बने मेवा युति हंसि हंसि पावत है सिय रघुवर  
 करते हैं स्वाद बखान रसिक जन नैननि तारे ॥  
 परस्पर देत हैं मुख में कोर प्रीतम प्यारी प्रेम विभोर  
 कभी साईं को खिलावन हित करते हैं मधुर निहोर

भई लीला ललित ललाम छाई है हर्ष बहारे ॥